GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 4
Special Issue: 1
September: 2025

‘ पूर्वापर ’ उपन्यास का मार्मिक चित्रण

डॉ. प्रियंका श्रीमाली

शाहजी का यह तीसरा उपन्यास हैं। जिसकी रचना सन् १९९० में रमेशचन्द्र शाह ने की । 'पूर्वापर' उपन्यास में नायक बंसी और उसके मित्र बंटू के बचपन के प्रसंग, बचपन की सारी यादें, संस्कार एवं तय किए आदर्शो आदि का द्धन्द्ध दिखाया गया है, तो जीवन के लक्ष्य को लेकर जो गलत फैसले लिए गये उनसे जो समस्याएँ उत्पन्न होती है, उसका यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

बंशी और बंटू दोंनो अच्छे मित्र हैं। बंशी एक ब्राह्मण परिवार का लड़का हैं, तो बंटू एक अच्छे संपन्न परिवार का लड़का हैं। बंशी युवान हो जाता हैं। युवान होने पर विवाह तय हो जाता हैं, पर वह विवाह से पहले ही घर छोड़कर चला जाता हैं, और संन्यासी हो जाता हैं। दूसरी तरफ बंटू इलाहाबाद विश्वविद्यालय में पढ़ाई पुरी करके वहीं पर व्याख्याता के रूप में जुड़ जाता हैं। दोनों मित्र अलग-अलग रास्ते पर चले जाने की वजह से दोनों का संपर्क टूट जाता हैं। एक दिन अचानक चाय की दुकान पर दोनों मिल जाते हैं। पर बंशी की बड़ी दाढ़ी और बढ़े हुए बाल के कारण बंटू बंशी को पहचान नहीं पाता । दुकानदार बंटू को पूछता हैं, क्या तुम इस साधु-बाबा को पहचानते हों ? बंसी भी उसे नहीं पहचान पाया। बंशी वहाँ से चला जाता हैं, और अपने जीवन की कथा बंटू को लिखकर भिजवाता है। यही आत्मकथा इस उपन्यास की मुख्य कथा हैं ।

बंशी की इस आत्मकथा की शुरूआत नौ वर्ष की आयु से होती हैं। बंटी की आयु भी नौ वर्ष की थी और दोनों साथ में पढ़ते थे। इसके अतिरिक्त उन दोनों के पिता भी साथ में पढ़ते थे। बंशी के घर जाकर बंटू स्कूल का काम करता था, और बंटू की बहन मीरा के साथ खेलता था । बंटू की माँ मीरा की सौतेली माता थी। मीरा बंशी और बंटू से पाँच साल बड़ी थी। बंशी के मन में मीरा के प्रति जो प्रेम भाव था उसका वर्णन लेखक ने बड़ी सहजता से व्यक्त किया हैं कि, "नौ वर्ष के बच्चे के अपने पांच वर्ष बड़ी 'बच्ची' के प्रति प्रेम की प्रगाढ़ता और तीव्रता का यह निरुपण अपनी सम्यकता और मार्मिकता में अद्‌भूत है। इन बच्चों में काम-वृत्ति का अभी लेशमात्र भी प्रकट नहीं हुआ हैं किन्तु तब भी यह उस वृत्ति का ही अस्फुट बीज हैं, जो इस प्रेम को उष्मा और सुगन्ध दे रहा है।"

बंशी के पिता यजमानों के घर पूजा-पाठ करते थे, इसके साथ-साथ उनके पंखे और कमरियाँ बनाकर बेचते थे और अपनी जीविका चलाते थे । इतनी महेनत करने के बाद भी दो टाइम खाने का जुगाड़ नहीं हो पाता था ।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 4
Special Issue: 1
September: 2025

बंशी कुछ बड़ा हुआ तो उसने अपने पिता का व्यवसाय संभाला और खुब महेनत करके अपने घर की स्थिति को अच्छा किया और अपनी बहन की शादी के लिए पैसे एकट्ठा किये। इन सब के बीच बंशी के छोटे भाई ने मेट्रिक की परीक्षा पास की तो उसके पिता ने पोस्टमास्टर को मनाकर डाकिये के पद पर उसे नौकरी दिलायी। पोस्टमास्टर ने गोविंद को नौकरी दिलायी इस बात का लाभ उठाकर उन्होंने अपनी कुबड़ी लड़की का विवाह बंशी के साथ करने का प्रस्ताव रखते हैं। इस प्रस्ताव को बंशी के पिता ने स्वीकार किया किन्तु बंशी गुस्से में आकर मना कर देता हैं। इस बात को बंशी के पिता उसे समझाते हुए कहते हैं, कि-

"कितना प्रतिष्ठित परिवार हैं! कन्या भी बेटा, बड़ी गुणवती हैं। बाबूजी कहती हैं मुझे, बिलकुल मन्नो रानी की तरह, भगवान की लीला अपरंपार हैं बेटा ! लीला-बस होने की किसी को सूरदास बना देते हैं और किसी को कुबजा सुन्दरी और फिर उन्हीं के प्रेम में पागल हो जाते हैं। ... और बोल ऐसा मीठा स्वभाव, ऐसा मोहिला कि क्या बताऊँ तुझे ! वो जो पगली थी न मीरा, बस उसी का अवतार समझ ।..." शादी के लिए पिता के द्वारा बंशी को समझाने का बहुत प्रयास किया जाता हैं, जिसका पता उपर्युक्त कहीं गई बात से चलता हैं।

इस बीच बंटू अपने घर में काम करनेवाली के साथ अनैतिक संबंधों के बारे में बंशी को बताता हैं, यह सुनकर बंशी बंटू पर गुस्सा होकर डाँटता हैं । बंटू को बंशी का डाँटना अच्छा नहीं लगता और वह बंशी से संबंध तोड़ देता हैं । इस बात का पता बंशी की बहन मन्नो को लगता हैं, वह झगड़े का कारण जाननें बंटू के घर पहुँच जाती हैं। वहाँ नौकरानी पूरे घर में अकेली होती हैं, पर मन्नो इस बात पर ध्यान नहीं देती। बंटू मन्नो को अपने ऊपर विश्वास देकर वह जीवनभर के लिए उसके भाई के साथ संबंध में बँध जाती हैं। जब बंटू इलाहाबाद पढ़ने के लिए जाता हे तब वहाँ से बंटू और मन्नो दोनों एक दूसरे को पत्र लिखते रहते हैं। बंटू का मन्नो के प्रति स्नेह देखकर बंशी बंटू के सम्मुख विवाह का प्रस्ताव रख देता हैं। जिससे बंटू को बहुत बड़ा आघात लगता हैं और वह गुस्सा हो जाता हैं।

बंशी जब बंटू को ढूँढता हुआ अपने भाई गोविन्दा के पास पहुँचा तो उसी समय गोविन्दा ने पिता की मृत्यु के समाचार भी दिये। इसके बाद बंशी उस स्थान पर डेरा डालने जाता हैं, जहाँ वह एक दिन बंटू और मीरा के साथ नगर से कुछ दूर घूमने गया था। वहाँ रहने पर उसे पता चलता है, कि नगर के उस मुहल्ले में आग लग गयी थी

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 4
Special Issue: 1
September: 2025

जिसमें उसका जो घर था । वहाँ जाकर उसने देखा कि मीरा के द्वारा दिये गये चित्र, मेज और गन्नों की बनायी गुडियाएँ सब जलकर राख हो गया हैं। सिर्फ उसके घर की एक दीवार ही बची हैं, उपर की छत भी गिर गई हैं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि यह उपन्यास बहुत ज्यादा मार्मिक एवं यथार्थ हैं । इसकी कथावस्तु समसामयिक मूल्यों पर आधारित हैं । इसके साथ कथा नायक ने अपने जीवन के संघर्ष को इस आत्मकथा के माध्यम से व्यक्त किया हैं, जो भारतीय धर्म-दर्शन के न जाने कितने पहलुओं को उजागर करता हैं।

सन्दर्भ :- १. 'श्रुजन यात्रा' सं. रमेश दवे – विजयकुमार दवे, पृ.११८

मद्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति हिन्दी भवन, प्रथम संस्करण-२००५

सन्दर्भ :- २. ' पुर्वापर ', ले. रमेशचन्द्र शाह, पृ-१५४

डॉ. प्रियंका श्रीमाली,

श्री सौरभ आर्ट्स, कॉमर्स और बीसीए कॉलेज,

गडू-विसनवेल रोड, जूनागढ.

गुजरात-३६२२५५

(M): + 91 973 7777 624